• आयोजन...

महाकुंभ

प्रयागराज में 13 जनवरी से महाकुंभ का आयोजन किया जा रहा है। ये 45 दिनों तक चलेगा। 26 फरवरी को महाशिवरात्रि के शाही स्नान के साथ इस महाकुंभ की समाप्ती हो जाएगी। साल 2025 के महाकुंभ को लेकर खूब बाते की जा रही हैं, लेकिन क्या आप जानते हैं कि आजाद भारत में पहले कुंभ का आयोजन कहां और किस साल में किया गया था। आइए आजाद भारत के पहले कुंभ के बारे में विस्तार से जानते हैं-

दरअसल, आजादी से पहले भी अंग्रेजी सरकार की ओर से कुंभ, अर्धकुम्भ और माघ मेला आयोजित किया जाता था। इस दौरान इंग्लैंड से ऑफिसर आते थे, जो मेले का प्रबंधन देखते थे। वहीं आजाद भारत में पहले कुंभ के आयोजन की बात करें तो ये मेला प्रयागराज में लगा था। आजाद भारत का पहला कुंभ प्रयागराज में साल 1954 में लगा था।

महीनों पहले इस कुंभ के आयोजन की तैयारियां शुरू कर दी गई थीं। इस कुंभ में देश के पहले प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू और राष्ट्रपति राजेंद्र प्रसाद भी शामिल हुए थे। प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू ने मौनी अमावस्या के दिन संगम के तट पर स्नान किया था। इसी दौरान एक हाथी के कंट्रोल से बाहर होने के बाद हादसा हुआ था। बताया जाता है कि इसमें 500

लोगों की जान गई थी। तभी से कुंभ में हाथी के आने पर रोक लगा दी गई थी।

इतना ही नहीं इसी हादसे के बाद प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू ने मुख्य स्नान पर्वों पर वीआईपीज के संगम में जाने पर रोक का आदेश दे दिया था। आज भी अर्द्धकुम्भ, कुंभ और महाकुंभ के मुख्य स्नान पर्वों पर वीआईपीज की एंट्री पर रोक बरकरार है। आजादी के बाद प्रयागराज में लगे इस कुंभ में 12 करोड़ लोग शामिल हुए थे।

इस कुंभ की तैयारियों का जायजा उस समय के यूपी के सीएम गोविंद बल्लभ पंत ने नाव पर और पैदल चलकर लिया था। बताया जाता है कि इस कुंभ में श्रद्धालुओं के इलाज के लिए संगम किनारे सात अस्थाई अस्पताल बनवाए गए थे। भूले-भटकों को मिलाने और भीड़ को सूचना देने के लिए लाउडस्पीकर्स भी थे। साथ ही रोशनी की खातिर कुंभ में 1000 स्ट्रीट लाइटें भी लगवाई गई थीं।

• सुख-शांति के लिए...

मकर संक्रांति पर करें दान...

हर साल सूर्य के मकर राशि में प्रवेश करने की तिथि पर मकर संक्रांति का पर्व मनाया जाता है। मान्यता है कि मकर संक्रांति के दिन कुछ विशेष चीजों का दान करने से साधक को सभी कष्टों से निजात मिलती है और सुख-शांति की

प्राप्ति होती है। अगर आप भी जीवन में शुभ फल प्राप्त करना चाहते हैं, तो मकर संक्रांति के दिन पूजा-अर्चना करने के बाद इन चीजों का दान करें।

- मकर संक्रांति के पर्व को कुछ जगहों पर खिचड़ी के नाम से जाना जाता है। इस खास अवसर पर खिचड़ी की सामग्री या फिर खिचड़ी बनाकर दान करें। मान्यता है कि खिचड़ी का दान करने से व्यक्ति की कुंडली में सूर्य, गुरु और चंद्रमा की स्थिति मजबूत होती है और परिवार में खुशियों का आगमन होता है।
- इसके अलावा इस दिन गुड़ दान भी किया जाता है। कहा जाता है कि मकर संक्रांति के दिन गुड़ का दान करने से भगवान सूर्यदेव प्रसन्न होते हैं। साथ ही उनका आशीर्वाद प्राप्त होता है।
- मकर संक्रांति के दिन गरीब लोगों को गर्म कपड़े और कंबल का दान करें। मान्यता है कि ऐसा करने से व्यक्ति को शनि पीड़ा और राहु दोष से छुटकारा मिलता है।
- इस दिन घी का दान करने से धन की मां लक्ष्मी प्रसन्न होती हैं और सदैव उनकी कृपा बनी रहती है। साथ ही धन का लाभ मिलता है।
- मकर संक्रांति के दिन काले तिल का दान करने का अहम महत्व है। इस खास अवसर पर काले तिल का दान अवश्य करें। जल में काले तिल डालकर भगवान सूर्यदेव को अर्घ्य दें। मान्यता है कि ऐसा करने से भगवान शनिदेव का आशीर्वाद प्राप्त होता है।

मकर संक्रांति राशि के अनुसार दान

- मेष राशि के जातक तिल गुड़ का दान करें।
- वृष राशि के जातक तिल का दान करें।
- मिथुन राशि के जातक पीली वस्तु का दान करें।
- कर्क राशि के जातक सफेद तिल और चावल का दान करें।
- सिंह राशि के जातक गुड़, गेंहू का दान करें।
- कन्या राशि के जातक हरी मूंग और तिल का दान करें।
- तुला राशि के जातक सतनाजा यानी सात तरह के अनाज और गुड़ दान करें।
- वृश्चिक राशि के जातक लाल वस्त्र के संग दही का दान करें।
- धनु राशि के जातक पीले वस्त्र गरीब और ब्राह्मणों को दान करें।
- मकर राशि के जातक शुद्ध घी और दाल चावल की खिचड़ी दान करें।
- कुंभ राशि के जातक मकर संक्रांति के दिन ऊनी कपड़े, सरसों तेल और चमड़े के जूते चप्पल का दान करें।
- मीन राशि के जातक चने की दाल संग तिल का दान करें।

धार्मिक मान्यता के अनुसार, अग्नि देव की पूजा करने से घर-परिवार में सुख, शांति, समृद्धि, धन और वैभव आदि का वास होता है। लोहड़ी के दिन रात्रि में एक स्थान पर आग जलाई जाती है, जिसमें तिल, गुड़, लकड़ी, चीनी, गजक, मूंगफली और मक्का आदि चीजें डाली जाती हैं। इस दौरान लोग लोहड़ी के गीत गाते हैं और डांस करके जश्न मनाते हैं। चलिए जानते हैं साल 2025 में किस दिन लोहड़ी का पर्व मनाया जाएगा...

सुंदर मुंदरिये हो...तेरा कौन विचारा हो

लोहड़ी भारत के एक महत्वपूर्ण और लोकप्रिय त्योहारों में से एक है, जो मुख्य रूप से हरियाणा और पंजाब में मनाया जाता है। ये पर्व फसल के पकने और तैयार होने के उपलक्ष्य में मनाया जाता है, जिस दिन अग्नि देव की पूजा का विधान है। इस शुभ दिन साधक भगवान का आभार प्रकट करते हैं, ताकि उनकी फसल का उत्पादन अच्छा हो। धार्मिक मान्यता के अनुसार, अग्नि देव की पूजा करने से घर-परिवार में सुख, शांति, समृद्धि, धन और वैभव आदि का वास होता है। लोहड़ी के दिन रात्रि में एक स्थान पर आग जलाई जाती है, जिसमें तिल, गुड़, लकड़ी, चीनी, गजक, मूंगफली और मक्का आदि चीजें डाली जाती हैं। इस दौरान लोग लोहड़ी के गीत गाते हैं और डांस करके जश्न मनाते हैं। चलिए जानते हैं साल 2025 में किस दिन लोहड़ी का पर्व मनाया जाएगा। साथ ही आपको लोहड़ी संक्रांति के क्षण और पूजा विधि के बारे में जानने को मिलेगा।

वैदिक पंचांग की गणना के अनुसार, मकर संक्रांति से एक दिन पहले लोहड़ी का पर्व मनाया जाता है। साल 2025 में 14 जनवरी को सुबह 9 बजकर 3 मिनट पर सूर्य देव मकर राशि में गोचर करेंगे, जिसके कारण 14 जनवरी को मकर संक्रांति का पर्व मनाया जाएगा। उदयातिथि के आधार पर मकर संक्रांति से एक दिन पहले 13 जनवरी 2025 को लोहड़ी मनाई जाएगी। 14 जनवरी 2025 को सुबह 09:03 मिनट पर लोहड़ी संक्रांति का क्षण है।

● लोहड़ी की पूजा विधि

- पर्व के दिन स्नान आदि कार्य करने के बाद घर में मौजूद मंदिर में पश्चिम दिशा में मां आदिशक्ति की प्रतिमा या चित्र स्थापित करें।
- मां आदिशक्ति के साथ भगवान कृष्ण और अग्नि देव की पूजा करें।
- मां की प्रतिमा के सामने सरसों के तेल का दीपक जलाएं।
- देवी को सिंदूर, रेवड़ी और तिल के लड्डू अर्पित करें।
- अब एक सूखा नारियल लें। उसमें कपूर डालकर अग्नि जलाएं।
- नारियल में मक्का, मूंगफली और तिल के लड्डू आदि अर्पित करें।
- शाम के समय लोहड़ी की 7 या 11 बार परिक्रमा करें। इस दौरान अग्नि में मक्का, मूंगफली, रेवड़ी, पॉपकॉर्न और तिल के लड्डू आदि अर्पित करें।

● काले कपड़े न पहन

हिंदू धर्म शास्त्रों में कहा गया है कि किसी भी शुभ मौके पर काले कपड़े नहीं पहनने चाहिए। ऐसे में अगर इस साल आप शादी के बाद अपनी पहली लोहड़ी मनाने जा रहे हैं, तो काले कपड़ों को पहनने से परहेज करें। लोहड़ी पर रंग-बिरंगे कपड़े पहने।

● सोलह शृंगार करना न भूले

लोहड़ी पर महिलाएं 16 शृंगार करें। पुरुष इस दिन नए वस्त्र पहने। नव विवाहित जोड़ों को रात के समय लोहड़ी की आग में तिल, गुड़, रेवड़ी और पॉपकॉर्न आदि डालना चाहिए। उसके बाद बड़े बुजुर्गों का आशिर्वाद अवश्य लेना चाहिए।

● जूते-चप्पल पहनकर न करें परिक्रमा

लोहड़ी की पूजा और परिक्रमा जूते-चप्पल पहनकर नहीं करनी चाहिए. ऐसी मान्यता है कि इस दिन जो जोड़े जूते-चप्पल पहनकर लोहड़ी की अग्नि की परिक्रमा करते हैं, उनका जीवन दुख और कष्टों से घिर जाता है। इस वजह से लोहड़ी की परिक्रमा नंगे पांव की जानी चाहिए।

● झूठा प्रसाद अग्नि में डालने से बचें

लोहड़ी की पूजा और परिक्रमा के दौरान अग्नि में तिल रेवड़ी और पॉपकॉर्न का प्रसाद डाला जाता है। प्रसाद डालते वक्त इस बात का विशेष ध्यान रखा जाना चाहिए कि वो प्रसाद झूठा न हो।

■ पं. कुलदीप शास्त्री

• शुभ...

हकीक पत्थर

ज्योतिष के अनुसार हकीक पत्थर जिसे अगेट के नाम से भी जाना जाता है अत्यंत ही शुभ होता है, हकीक के कई रंग होते हैं, लेकिन भारत में काला, सफेदद, पीला, लाल, हरा, और नीला रंग का हकीक ही पाया जाता है। यदि कठिन मेहनत और प्रयास के बाद भी आपको पैसों की किल्लत बनी रहती है या फिर आपके पास पैसा नहीं टिकता है तो धन की देवी मां लक्ष्मी की कृपा पाने के लिए आपको हकीक पत्थर से जुड़ा यह उपाय अवश्य करना चाहिए. अपनी आर्थिक दिक्कतों से मुक्ति पाने के लिए किसी भी शुक्रवार को माता लक्ष्मी की पूजा में हकीक पत्थर की माला से ऊं ह्रीं ह्रीं श्रीं श्रीं लक्ष्मी वासुदेवाय नमः मंत्र का कम से कम 108 बार यानि एक माला जप जरूर करें। जप के बाद हकीक की माला को श्रद्धा और विश्वास के साथ माता लक्ष्मी को अर्पित कर दें। आर्थिक दिक्कत को दूर करने का यह काफी कारगर उपाय है, जिसका शुभ परिणाम शीघ्र ही दिखने लगता है।

• तिजोरी की दिशा...

वास्तुशास्त्र के अनुसार, घर या दुकान में तिजोरी या फिर अलमारी को हमेशा उत्तर दिशा में रखना चाहिए। यह दिशा शुभ माना जाती है। क्योंकि उत्तर दिशा में धन की देवी लक्ष्मी व कुबेर देवता का स्थान माना जाता है। इन्हें धन व समृद्धि का प्रतीक माना जाता है। इसलिए अगर इस दिशा में आप अपनी तिजोरी या अलमारी रखते हैं, तो इससे आपकी आर्थिक स्थितियां ठीक होती हैं और कर्ज चुकाने में भी आपको आसानी होती है।

स्वामी/प्रकाशक/मुद्रक/संपादकः अनल पत्रवाल द्वारा गांव व डाकघर-रजियाणा, तहसील-नगरोटा बगवां, जिला-कांगड़ा-176056, हिमाचल प्रदेश से प्रकाशित एवं एजीएस पब्लिकेशन्स, डी-67, सेक्टर-6, नोएडा-201301, गौत्तम बुद्ध नगर, उत्तर प्रदेश से मुद्रित